प्रणय-रात्रि

(१)

पटना में एक स्त्री रहती थी। उसका नाम वासव था।

वह सुन्दरी थी। उसके शरीर में वसन्त की बहार, मोहनी और सुगंध थी।

वह युवती थी। उसके यौवन में बढ़ते हुए चन्द्रमा का विकास और माधुर्य्य और काव्य था।

वह धनवती थी। उसके सन्दूकों में बहुमूल्य वस्त्र, मनोहर आभूषण और सोने की मोहरें थीं।

परन्तु उसके पास कुछ भी न था—वह वेश्या थी।

(२)

उसी नगर के बाहर एक नवयुवक साधु रहता था। उसका नाम उपगुप्त था।

उसके पास अपना मकान न था। उसके पास अपने वस्त्र न थे। उसके पास रुपया-पैसा न था।

परन्तु उसके पास आँखों की मुस्कान, चित्त की स्थिरता और शान्ति की नींद थी।

वासव धर्म्म को पाप की पृथ्वी पर पछाड़ती थी, उपगुप्त अधर्म्म के अभागे पुत्रों की शोचनीय अवस्था पर अपनी सुन्दर आँखों के पवित्र आँसू बहाता था। और दोनों को एक दूसरे का पता न था।

(३)

एक दिन दैवयोग से दोनों का सङ्घात हो गया।

उपगुप्त ने पाप की पुत्री वासव को देखा, और आँखें झुका लीं। वासव ने धर्म के भिक्षु उपगुप्त को देखा, और उसके हृदय में हलचल मच गई।

वासव ने कुसुम-संगीत से भी सुकोमल स्वर में कहा—"जोगी! यहाँ मिट्टी में क्यों पड़े हो? मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें दिल के आसन पर बिठाऊँगी।"

उपगुप्त के मनमन्दिर पर स्त्री के सौन्दर्य ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति से आक्रमण किया। परन्तु उस पर असर न हुआ।

उसने पृथ्वी की ओर देखा और कहा—"अभी समय नहीं आया। कभी मिलूँगा।"

(४)

दो वर्ष बीत गये। वासव के दिल में एक ही चिन्ता, एक ही अभिलाषा थी—प्रणय-रात्रि कब आयेगी।

वह बार बार उपगुप्त के पास गई। परन्तु उसने हरबार यही उत्तर, दिया—"अभी वह रात नहीं आई।"

हारकर वासव ने उपगुप्त का विचार भुला दिया, मगर उपगुप्त के हृदय में उसकी स्मृति ज्यों की त्यों बनी हुई थी।

(५)

पटना में एक स्त्री रहती थी।

वह कुरूपा थी, उसके शरीर से दुर्गन्ध आती थी। वह बूढ़ी थी, उसके शरीर

को मौत का कीड़ा लग चुका था। वह निर्धन थी, उसे रोटी के एक-एक टुकड़े के लिए दूसरों के मुँह की ओर देखना पड़ता था।

यह वही सुन्दरी, कोमलांगी धनवती वासव थी। आज उसकी तरफ़ कोई देखता भी न था।

(६)

सौंदर्य्य और यौवन के विनाश का यह समाचार उपगुप्त ने सुना, और वह अपनी तपस्या छोड़कर वासव के पास आया।

"कौन है ?"

"उपगुप्त"

"चले जाओ" वासव ने चीख़कर कहा—"अब समय नहीं रहा।"

"नहीं वासव ! आज ही प्रणय-रात्रि है। आज ही मेरे आने का समय है। जब सुन्दरता, सुख और वैभव के दिन थे, उन दिनों तुम्हें मेरी आवश्यता न थी। तुम्हारे पास और कई रसिया थे। परन्तु आज वह लावण्य बूढ़ा हो चुका है, वह शोभा कुम्हला गई है, वह सुख बीते हुए समय की स्मृति के समान दुःखदायक रह गया है। आज वह तुम्हारे प्रेमी कहाँ हैं ? आज वह तुम्हारे यौवन के लोभी कहाँ चले गये ? किस दुनिया को ? आज मेरा समय है। आज मेरी प्रणय-रात्रि है। मैं आया हूँ और तुम्हें छोड़कर कहीं न जाऊँगा—मैं तुम्हारी सेवा करूँगा।"

वासव ने अपनी मरती हुई आँखें खोलीं और फिर सदा के लिए बंद कर लीं।

उपगुप्त ने कमण्डल से पानी लेकर वासव के गले में टपकाया। पर वह कहाँ थी ?

उपगुप्त की आँखें भी सजल हो गईं।